

# समानुभूतिया परानुभूति

## परिचय

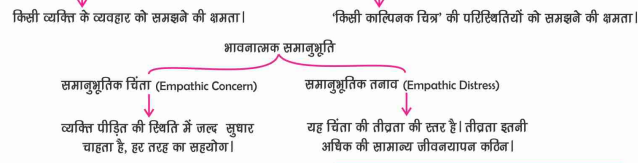
किन्हीं व्यक्ति की किन्हीं अल्प व्यक्ति, प्राणि या किन्हीं कल्पनिक चरित्र की मन-स्थितियों को सटीक रूप में समझने की क्षमता।  
अथवा समानुभूति केवल दूसरों की मन-स्थितियों की समझने की क्षमता नहीं अपितु उन्हीं भावनाओं को उस स्तर पर महसूस करना जिस स्तर पर उन्हें मूल व्यक्ति ने अनुभव किया।  
इसका चरम वर्ण दिखता है जहाँ व्यक्ति की चेतना में 'स्व' तथा 'पर' का अंतर मिटने लगता है।

## समानुभूति एवं सहानुभूति

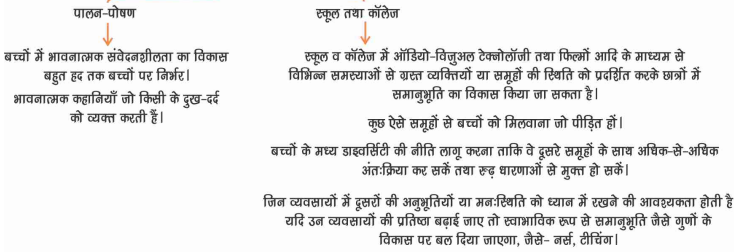
अगर समानुभूति को सिर्फ संज्ञानात्मक स्तर पर समझे जहाँ व्यक्ति दूसरे की पीड़ा को देखकर दुखी होता है और चाहता है कि उसकी पीड़ा दूर हो।  
दूसरी ओर एक व्यक्ति दूसरे की मन-स्थिति को इस प्रकार समझता है कि 'स्व' और 'पर' का भेद खत्म हो जाए। समानुभूति, सहानुभूति का ही अगला स्तर है।  
समानुभूति में जब भावनात्मक स्तर भी शामिल हो जाए तो उसे सहानुभूति कहते हैं।

## समानुभूति के प्रकार

समानुभूति को संज्ञानात्मक समानुभूति तथा भावनात्मक (Affective/Emotive) में बाँटा गया।  
समानुभूति को दो भागों में विभाजित किया गया-  
परिप्रेक्ष्य ग्रहण (Perspective) कल्पना (Fantasy)



## समानुभूति का विकास



## कुछ शोध परिणाम

1. दो वर्ष की उम्र से पहले समानुभूति का विकास नहीं होता।
2. दो से 7 वर्ष की उम्र के मध्य समानुभूति का विकास कम।
3. सात के बाद विकास होता रहता है।
4. ट्रेनिंग देकर भी इसका विकास किया जा सकता है।
5. महिलाओं में पुरुषों की तुलना में समानुभूति का स्तर उँचा।
6. उम्र के साथ समानुभूति की क्षमता बढ़ जाती है।

# समानुभूति या परानुभूति

## सहिष्णुता

शाब्दिक अर्थ सहन करना है।  
सहिष्णुता का अर्थ है गिन व्यक्तियों की आदतों, विचारों, धर्म, राष्ट्रीयता आदि से व्यक्ति भिन्न या विरोधी मत रखता है तो भी उनके प्रति न्यायपूर्ण तथा सम्मानपूर्ण अभिवृत्ति बनाए रखना तथा किन्हीं भी प्रकार की आक्रामकता से बचना।  
सीमित अर्थों में इसका आशय विरोधियों को सहन करने से है, व्यापक अर्थ में विरोधियों के विचारों का सम्मान करना, उन्हें सुनने, समझने तथा तार्किक रूप से सही होने पर स्वीकार करना है।  
वर्तमान में सहिष्णुता की आवश्यकता केवल विभिन्न धर्मों के प्रति ही नहीं बल्कि विभिन्न जातियों, महिलाओं, एलजीबीटी, शरणार्थियों व विदेशियों के प्रति भी है।

## लाभ

1. विरोधी विचारों को सुनने की ताकत हो तो समाज और राजनीति दोनों लोकतांत्रिक बनते हैं।
2. कई बार वैयक्तिक सुनने से नए विचार प्राप्त होते हैं।
3. अगर व्यक्ति नैतिक व्यवहार करता है तो इससे इस बात की भी प्रेरणा मिलती है कि वह अन्य के प्रति सहिष्णु व्यवहार करे।
4. इससे चिंतन व अभिव्यक्ति को बढ़ावा मिलता है।